चहचहाते पलों को ढूंढ़ता मानव मन....

- प्रियंवदा अवस्थी

निजत्व की भावनाओं से रंगी चित्रकारियां, जिनको हम इक्कीसवीं सदी वालों ने सेल्फ़ी नाम दिया, इन दिनों आत्मप्रचार का ज़रिया बन गई है और इस शौक़ में ख़ुद को भूले हुए लोग यह नहीं सोचना चाहते कि जीवन के लिए कैमरे से ज़्यादा रिश्तों की गुनगुनाहट ज़रूरी है।

फ़ुर्सत के आईने में कभी खुद को निहारना भूल ही गए हैं। तो दूसरी ओर आत्म प्रेम की बौराती हुई सावनी पींगों को सेल्फी के रूप में सहेज रहे हैं। ये सेल्फ़ियां चौतरफ़ा प्रतिस्पर्धा से भरी ज़िंदगी का वह बेशकीमति समय होती हैं, जब हम अपनी ढ़ेरों अनकही अनदेखी भावनाएं बाँटते हैं। ये सेल्फ़ियां स्वयं में ही गुम हो गए व्यक्ति को स्वयं से दोबारा मिलाने का कलात्मक प्रयास भी होती हैं। पर सच कहें, तो इनमें व्यक्ति का बढ़ता मानसिक एकाकीपन ही झलकता है। अहम तत्वों की

स्वत्व बेहद ज़रूरी है, पर....

स्वत्व की पहचान के बिना क्या स्वाधीनता और क्या स्वाभिमान! किंतु खुशी के रंग बिखराती हुई ये सेल्फ़ियां स्वत्व का कैसा रूप है? काश कि ये चित्र अपनी कृत्रिमता को छोड़कर अपने असल और बेहद प्राकृतिक रूप में प्रकट हों।

रिश्तों का मनोविज्ञान

भागम-भाग से भरा हुआ आज का सामाजिक मानवीय परिवेश। अस्त-व्यस्त सी जीवन शैली। एक ही ढर्रे पर चलती हुई उबासियां लेती हुई दिनचर्या। जैसे हम इंसान बिखरी हुई चिंदियां, जिनको जोड़ इन्सान अपने एकाकीपन पर रेशमी पैबंद लगा लेता है। कभी झाँककर देखिये इन चमकीली, चटकीली तस्वीर में, यहां आपको वे समझौते भी नज़र आएंगे, जिसे वो सेल्फी लेने वाला जानता ज़रूर है, किंतु पहचानता नहीं, अथवा पहनचानकर भी नहीं पहचानना चाहता। वह सिर्फ पलायन करता रहता है। जीवन स्तर को सुदृढ़ करने और व्यावसायिक मजबूरी में हम आज बड़ी दूर निकल आए हैं। हमारी इसी तन्हाई ने गढ़ी हैं ये सेल्फ़ियां।

वो गुनगुने रिश्ते

एक वो भी समय था जब गुज़रते हुए समय की परवाह ही न थी। हर दिन हर पल आने वाली घड़ी को पूरे जज़्बे से जी लिया करते थे हम। किंतु आज कब सुबह हुई कब शाम ढ़ल गई पता ही नहीं चलता।

भले ही कितनी भी व्यस्तता रही हो जीवन में, किंतु दिन के प्रहरों पर कुछ निठल्ली हुई सी इच्छाओं और तरंगित भावनाओं के सौम्य पहरे हुआ करते थे मन में। जो कभी बंधन नहीं लगते थे, बल्कि हमें मानसिक उन्मुक्तता दे जाया करते थे चुपके से।

अब कहां रह गए वो बड़े-बड़े घोंसलेनुमा परिवार और उनके बीच एक दूसरे को भावनात्मक गर्माहट देते सहलाते हुए से, चहचहाते हुए ढ़ेरों रिश्ते। जहां हमें अपने अच्छे-बुरे कैसे भी समय की स्मृतियों को कभी यूं अकेले में सहेजने की इतनी ज़रूरत कभी महसूस नहीं हुई। जहां जीवन का हर पहलू सहज, सरल और सुगम था। जहां हम एक-दूसरे में रचते-बसते, हंसते-रोते, रूठते-मनाते घुलते हुए आगे बढ़ते जाते थे। पर कभी इतने एकाकी नहीं हुए कि अपनी ही मुस्कान को कुरेदने टटोलने को किसी कृत्रिम कैमरे की आवश्यकता भी महसूस हुई। आख़िर हम हर क्षण को कैमरे में क़ैद क्यों करना चाहते हैं?

पहचानें मन की... - पेज 5 का शेष

किसी चीज़ के लायक नहीं हैं, विशेष रूप से प्यार के। ऐसे बच्चे प्यार की पूर्ति के लिए जबरन दूसरे को प्यार करते हैं, एकतरफा प्यार, जिसे अंग्रेजी में क्रेज़ी भी कहते हैं। तीसरा है, 'जिसे कभी अकेला ना छोड़ा जाता हो' यह उन बच्चों को होता है जिन्हें माँ-बाप ने फिज़िकल, सोशल और इमोशनल सपोर्ट तो दिया हो, लेकिन उसे फ्रीडम नहीं दी। इसलिए ऐसे बच्चे अपना अस्तित्व बनाने के लिए अपने माँ-बाप को छोड़कर अकेले रहने चले जाते हैं। इन तीनों डर को समाप्त करने का एक ही आधार है, और वो है परमात्मा। यदि हम उससे अपने आपको जोड़ लेते हैं, तो हमारे तीनों डर हमेशा के लिए खत्म हो जायेंगे। क्रमश:

भुवनेश्वर-ओडिशा। माननीय मुख्यमंत्री नवीन पटनायक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं ब्र.कु. त्रिपुरा, ब्र.कु. कबिता तथा अन्य।

बीकानेर-राज.। अर्जुनराम जी,यूनियन मिनिस्टर ऑफ स्टेट,फाइनेन्स, कॉर्पोरेट अफेयरस ऑफ इंडियन गर्वनमेंट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कमल। साथ हैं ब्र.कु. रजनी, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

मोहद्दीपुर-उ.प्र.। एस.एस.बी. कैम्प फर्टीलाइज़र गोरखपुर में एस.एस.बी. जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पुष्पा।

साहिबाबाद-उ.प्र.। डॉ. नलिन सिंघल,चेयरमैन एंड मैनेजिंग डायरेक्टर,सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक्स लि. साहिबाबाद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विद्या।

किशनगढ़-रेनवाल(राज.)। ब्र.कु. आरती के समर्पण समारोह कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक निर्मल कुमावत, नगरपालिका अध्यक्षा सुमन कुमावत, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. सुमित्रा, ब्र.कु. सीताराम तथा अन्य।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। फिरोज़ाबाद जिला सत्र न्यायाधीश पी.के. सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

सीतापुर-उ.प्र.। जिलाधिकारी बहन सारिका मोहन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी। साथ हैं ब्र.कु. ज्ञानु।

हाजीपुर-विहार। एस.पी. राकेश कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अंजली।

डालटनगंज-झारखण्ड। विपुल शुक्ला,डी.आई.जी.,उप महानिरीक्षक,पलामु रेंज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरण।

नूह-हरियाणा। डी.सी. मणिराम जी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रेरणा। साथ हैं ब्र.कु. संजय हंस।

चण्डीगढ़। डॉ. राकेश गुप्ता,आई.ए.एस. को राखी बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

राउरकेला-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सोरदा गवर्नमेंट यू.पी. स्कूल में रक्षाबंधन तथा वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. जयश्री।